19

''सबने चकित होकर परमेश्वर की बड़ाई की''

चंगाई की यीशु की सेवकाई, एक निकट दृष्टि

इस सप्ताह का हमारा बाइबल पाठ यह संकेत देता है कि यीशु की सेवकाई का एक महत्वपूर्ण भाग उसके द्वारा की गई चंगाई थी।[1] उदाहरण के लिए, कफ़रनहूम के आराधनालय में, यीशु ने एक आदमी से अशुद्ध आत्माओं को निकाला (मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37)। जिससे ''सब लोग आश्चर्य'' करने लगे और ''उसका नाम तुरन्त गलील के आस-पास के सारे देश में हर जगह फैल गया'' (मरकुस 1:27, 28)।

आराधनालय से यीशु और उसके चेले पतरस तथा अन्द्रियास के घर चले गए। वहां यीशु ने पतरस की सास को चंगा किया। उस शाम ''वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए, जिनमें दुष्टात्माएं थीं। उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया'' (मत्ती 8:16; पढ़ें आयतें 14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)।

अगली सुबह, यीशु इलाके में से होते हुए प्रचार करने के लिए निकल पड़ा (मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44)।

> यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। ... और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली (मत्ती 4:23-25)।

प्रचार के दौरान यीशु द्वारा किया गया एक आश्चर्यकर्म विस्तार में लिखा गया है: कोढ़ी को चंगा करना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)। यीशु ने उस कोढ़ी से कहा था कि वह किसी को न बताए, परन्तु उसने बता दिया। इससे यीशु इतना प्रसिद्ध हो गया कि वह ''फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, ... और चहुंओर से लोग उसके पास आते रहे'' (मरकुस 1:45)।

यीशु कफ़रनहूम में लौट आया-सम्भवतया कुछ आराम करने के लिए, परन्तु आराम कर नहीं पाया, ज़्योंकि उस घर में, जहां वह ठहरा हुआ था, लोगों का आना जारी था। छत में से

नीचे उतारे जाने वाले आदमी को यीशु ने यहीं पर चंगा किया था (मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)। यीशु ने उससे कहा था, ''मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा'' (मरकुस 2:11)। मरकुस के अनुसार, वह आदमी ''उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के साज्हने से निकलकर चला गया, इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा'' (आयत 12)। KJV में केवल इतना ही बताया गया है कि ''वे सब चकित हुए, और परमेश्वर की महिमा करने लगे।'' हमारे इस पाठ का शीर्षक इसी आयत से लिया गया है।

सुसमाचार के वृज़ांतों के अपने पाठ को जारी रखते हुए, हम यीशु के आश्चर्यकर्मों व आश्चर्यकर्म से चंगाई देने के बारे में और पढ़ेंगे। उसके आश्चर्यकर्मों के बारे, विशेषकर बीमारों को चंगा करने पर कुछ ध्यान देना उपयोगी रहेगा।

यीशु के आश्चर्यकर्मों की *न्यायसंगिकता*

मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि यीशु ने सचमुच में आश्चर्यकर्म किए थे। वे आश्चर्यकर्म बिल्कुल वैसे ही हुए जैसे मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों में लिखे गए हैं।

बाइबल और यीशु की ईश्वरीयता पर विश्वास न करने वाले लोग बाइबल के आश्चर्यकर्मों का मज़ाक उड़ाते हैं। वे पूछते हैं, ''ज़्या तुज़्हें सचमुच यकीन है कि एक बड़ी मछली योना को निगल गई होगी?'' ''ज़्या तुज़्हें सचमुच लगता है कि यीशु ने कुछ रोटियों और कुछ मछलियों से पांच हज़ार लोगों को पेट भर खिलाया होगा?'' कुछ लोगों ने, जो मसीही होने का दावा करते हैं, आश्चर्यकर्मों की कोई तर्कसंगत व्याज़्याओं को ढूंढ़ने के लिए हद ही कर दी है: ''हां, उस जमाने के लोगों को इतना ज्ञान नहीं था, जितना हमें आज है। वे उनको आश्चर्यकर्म कहते थे, जो वास्तव में आश्चर्यकर्म नहीं थे।''

पुन: मैं इस बात की पुष्टि करता हूं कि *यीशु द्वारा किए आश्चर्यकर्म वास्तव में वैसे ही थे जैसे मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना ने अपनी पुस्तकों में लिखे हैं*। इस बात के सच होने को मानने के कई कारण हैं। मैं यहां कुछ कारण बताता हूं।

मैं इसे इसलिए सच मानता हूं, ज़्योंकि मैं परमेश्वर में विश्वास रखता हूं। यदि कोई परमेश्वर में विश्वास रखता है, तो उसे यह मानना चाहिए कि ''परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 10:27)।

मैं इस पर इसलिए यकीन करता हूं, ज़्योंकि मुझे बाइबल पर विश्वास है। यह विश्वास करने के लिए कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है, हमारे पास अच्छा कारण है (2 तीमुथियुस 3:16)। वर्षों से, इसने अपने आप को एक विश्वसनीय पुस्तक के रूप में प्रमाणित किया है, जिस पर हम अपने जीवन सचमुच निर्भर कर सकते हैं। परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई यह बाइबल हमें यीशु के आश्चर्यकर्मों के बारे में बताती है।

मेरे विश्वास का अगला कारण इस कारण से बहुत मिलता-जुलता है: मैं इसे इसलिए सच मानता हूं, ज़्योंकि यीशु के आश्चर्यकर्म विश्वसनीय गवाहों द्वारा लिखे गए थे। जिस प्रकार और जिस समय उन्हें लिखा गया, उससे इस तथ्य की ओर ध्यान जाता है कि वे

विवेकी लोगों द्वारा लिखे गए थे, न कि ऐसे लोगों द्वारा जिन्हें पता नहीं हो कि वास्तव में ज़्या हुआ–और निश्चय ही न ऐसे लोगों द्वारा लिखे गए जिनकी मंशा लोगों को गुमराह करने की रही हो।

मैं इसे इसलिए सच मानता हूं, ज़्योंकि यीशु के आश्चर्यकर्म उसके दावों को साबित करते हैं। यीशु ने परमेश्वर का पुत्र, मसीहा, जगत की ज्योति, जीवन की रोटी और पाप क्षमा करने वाला होने का दावा किया। वे दावे हद से ज़्यादा थे! ऐसे दावे करने वाला या तो उन दावों की सच्चाई साबित करे, वरना वह झूठा ठहरेगा। किसी ने कहा है कि यीशु या तो झूठा था, या सनकी या फिर सचमुच प्रभु। इनमें से केवल एक बात प्रमुख है। यदि कोई यीशु को झूठा या सनकी कहना नहीं चाहता, तो फिर उसे मान लेना चाहिए कि वह प्रभु ही है–और आश्चर्यकर्म करने की उसकी क्षमता प्रभु होने की उसकी स्थिति से मेल खाती है।

मैं इसे इसलिए सच मानता हूं, ज़्योंकि यीशु और उसके प्रभाव के बारे में उसके आश्चर्यकर्मों के बिना बताने का कोई और ढंग नहीं है। जब मैं ACU का छात्र था,[2] तो कुछ धर्मशास्त्री (थियोलॉजियन) एक काम कर रहे थे, जिसे वे ''ऐतिहासिक यीशु की खोज'' कहते थे। वे आश्चर्यकर्मों में विश्वास नहीं रखते–उनके अनुसार, ''आश्चर्यकर्म'' अन्धविश्वासपूर्ण मूर्खता हैं–इसलिए वे ''वास्तविक यीशु'' को जो पृथ्वी पर चला–फिरा, ढूंढ़ने के लिए यीशु की कहानी में से आश्चर्यकर्मों को निकालने की कोशिश कर रहे थे। अन्त में उन्हें एक अज्ञात, अनपढ़ नैतिक दार्शनिक मिला, जो संसार के एक गुमनाम कोने में रहता था। किसी ने कहा कि यदि *यह* ''यीशु'' संसार का इतिहास बदल सकता है तो यह नये नियम वाले मसीह के सब आश्चर्यकर्मों से बड़ा आश्चर्यकर्म होगा! मेरे एक शिक्षक, जे.डी.थॉमस ने इन विद्वानों के प्रयास की तुलना प्याज़ की गुठली निकालने के लिए उसे छीलने की कोशिश करने से की। प्याज़ को छीलने के बाद उसमें कुछ बाकी नहीं बचता। यीशु के आश्चर्यकर्मों को निकालकर उसके बारे में और उसके प्रभाव के बारे में नहीं बताया जा सकता।

मेरा विश्वास है कि यीशु के आश्चर्यकर्म सचमुच वैसे ही हुए जैसे सुसमाचार के वृज़ांतों में लिखे गए हैं, ज़्योंकि यीशु के शत्रु भी इस बात से इनकार नहीं कर सकते थे कि उसने आश्चर्यकर्म किए हैं। इस सप्ताह के हमारे बाइबल पाठ में, यीशु द्वारा अधरंगी को चंगा करने के समय उसके आलोचक वहीं थे। यीशु ने उन्हें एक चुनौती दी: ''परन्तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा)। मैं तुझ से कहता हूं; उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा'' (मरकुस 2:10, 11)। उसके आलोचक इससे इनकार नहीं कर पाए कि वह आदमी उठकर चला गया था।

यूहन्ना 9 अध्याय में, हम जन्म के एक अन्धे को चंगा करने के बारे में पढ़ेंगे। यीशु के शत्रु इससे खुश नहीं थे और उन्होंने यीशु को बदनाम करने की कोशिश की, परन्तु एक बात, जो वे नहीं कर पाए, वह यह थी कि उन्होंने इनकार नहीं किया कि आश्चर्यकर्म हुआ था (आयत 16)।

यूहन्ना 11 अध्याय में हम लाज़र को जिलाने के बारे में पढ़ेंगे। ध्यान दें कि यीशु के

शत्रुओं ने ज़्या कहा: ''हम करते ज़्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिह्न दिखाता है'' (आयत 47)।

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने अपने साथी यहूदियों को यीशु का प्रचार करते हुए कहा, ''यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रकट है, जो परमेश्वर ने तुज़्हारे बीच उसके द्वारा करके दिखाए गए, *जिसे तुम आप ही जानते हो*'' (प्रेरितों 2:22)। किसी ने उसे रोककर शोर नहीं मचाया, ''नहीं, उसने नहीं दिखाए!''

बाइबल के समयों में केवल यह सच ही नहीं था कि लोग यह इनकार नहीं कर पाए कि यीशु ने आश्चर्यकर्म किए थे। मसीहियत के आरज़्भिक दिनों में, ऐसे लोग उठे, जिन्होंने मसीहियत का नाश करने के प्रयास में किताबें लिखीं। सेल्सस, हियरोज़्लस, और विश्वास से फिरने वाले जूलियन उन्हीं में से थे। शायद ही कोई अपवाद हो जिसमें यह कहा गया हो कि इन लोगों ने यीशु द्वारा किए आश्चर्यकर्मों का इनकार किया।

इसके अलावा, मेरा विश्वास है कि यीशु के आश्चर्यकर्म प्रामाणिक हैं, ज़्योंकि आज भी हम उनमें कमी नहीं निकाल सकते। कभी-कभी कोई कहता है, ''यह सच है कि उन्हें लगता था कि यीशु आश्चर्यकर्म कर रहा था, परन्तु ऐसे और कई लोग भी थे, जो आश्चर्यकर्म या चमत्कार करने का दावा कर रहे थे, जैसे शमौन जादूगर और अन्य लोगों को लगता था कि *वे* चमत्कार करने वाले हैं। यीशु केवल लोगों को गुमराह करता था।'' इस दलील में कुछ वज़न हो सकता है, यदि यह तथ्यों के लिए न हो: वही जो लोगों को गुमराह कर रहे थे, जो जानते थे कि लोगों को कैसे मूर्ख बनाना है और लोगों को अपने पीछे कैसे लगाना है, यीशु और उसके आश्चर्यकर्मों से प्रभावित थे। प्रेरितों 8 अध्याय में शमौन जादूगर की कहानी पर विचार करें। यहूदा पर भी विचार करें। यहूदा को सब भीतरी ज्ञान था कि यीशु ज़्या करता था। यदि यीशु भीड़ को उल्लू बना रहा होता, तो यहूदा को निश्चय ही इसका पता था। परन्तु जब यहूदा ने यीशु को पकड़वाने का फैसला किया, तो वह यीशु के शत्रुओं को ऐसी कोई बात नहीं बता सका, जिसका इस्तेमाल वे मुकदमे में कर सकें। वह उन्हें केवल वही बता सका कि यीशु कहां मिलेगा, ताकि वे उसे गिरज़्तार कर सकें।

कुछ लोगों ने विरोध किया है, ''ठीक है, बेशक वे विवरण विश्वसनीय हैं, यदि ये बातें वैसे ही हुई हैं, तो जिन्होंने उन्हें लिखा उन्हें यह *समझ* नहीं थी कि ज़्या हो रहा है। उन्हें मनोदैहिक रोग का पता नहीं था। आज हम जानते हैं कि शारीरिक समस्याओं वाले लोगों की 80 प्रतिशत बीमारियां उनके मन में होती हैं। *इसलिए* यीशु उन लोगों को चंगा कर पाया था।''

मैं कभी इनकार नहीं करता कि बहुत सी बीमारियां मानसिक होती हैं, परन्तु यीशु के आश्चर्यकर्मों के संदर्भ में यह बात नहीं कही जा सकती: कोढ़ी व्यज़्ति की चंगाई का मन या दिमाग़ से कोई सज़्बन्ध नहीं हैं। सूखे अंगों के फिर से ठीक हो जाने को भी मानसिक बीमारी नहीं कहा जा सकता। जन्म के अन्धे की बीमारी भी मानसिक नहीं हो सकती। अन्धा जन्मा यह आदमी बाद में मनोदैहिक अन्धा नहीं हुआ था। ज़्योंकि वह *जन्मजात* ही अन्धा था। तीन दिन के मरे और बदबू छोड़े लाज़र को यीशु द्वारा ज़िन्दा करने की बात को

ज़्या कहा जाए? (यूहन्ना 11)। ज़्या लाज़र को *लगा* कि वह तीन दिन से मुर्दा था?

यीशु ने बहुत से आश्चर्यकर्म साधारण लोगों की आंखों के सामने किए थे। वे आश्चर्यकर्म अविश्वासियों के सामने हुए। काफ़ी समय तक उसके आश्चर्यकर्म होते रहे, जिसमें उसकी सामर्थ अलग-अलग बातों में दिखाई गई: प्रकृति पर शज़्ति, बीमारियों पर शज़्ति, दुष्टात्माओं पर शज़्ति, अलौकिक ज्ञान पर शज़्ति, सृष्टि से जुड़ी बातों से शज़्ति और मृत्यु पर शज़्ति। इनमें कोई कमी नहीं निकाली जा सकी।

यीशु ने सचमुच ...

... कफ़रनहूम के आराधनालय में एक अधरंगी को चंगा किया!

... पतरस की सास को चंगा किया!

... कफ़रनहूम में और गलील में अपने पास आने वाले सब लोगों को चंगा किया!

... कोढ़ से भरे एक आदमी को चंगा किया!

... कफ़रनहूम में छत के बीच में से उतारे गए आदमी को चंगा किया!

यीशु के आश्चर्यकर्मों की *वास्तविकता*

बाकी अध्ययन में, हम यीशु के आश्चर्यकर्मों, विशेषकर उसकी चंगाइयों पर ध्यान से नज़र डालेंगे। आगे हमें ऐसे कई आश्चर्यकर्म बार-बार मिलेंगे।

यीशु के तब के आश्चर्यकर्म

आज हम ''आश्चर्यकर्म'' शज़्द का इस्तेमाल बड़ी लापरवाही से करते हैं: हम ''जन्म को आश्चर्यकर्म'' कहते हैं। हम कहते हैं, ''यदि मैं परीक्षा में पास हो जाऊं, तो यह आश्चर्यकर्म या चमत्कार होगा'' या ''यदि इस साल मुझे कोई अल्सर नहीं होता, तो यह एक बहुत बड़ा चमत्कार होगा।'' परन्तु बाइबल के अनुसार, जिस प्रकार बाइबल में ''आश्चर्यकर्म'' शज़्द का इस्तेमाल हुआ है, उसका एक विशेष अर्थ है। यह हर रोज़ होने वाली बात नहीं थी। यह प्राकृतिक नियम या मानवीय प्रयास का परिणाम नहीं था। यह अलौकिक था, ज़्योंकि उस समय प्राकृतिक नियम एक ओर रख दिए गए और अलौकिक नियमों का बोल-बाला था- परन्तु यह इससे भी बढ़कर था। यह प्राकृतिक संसार में एक ऐसे ढंग से अलौकिक कार्य था कि सब लोग देख और सुनकर मान सकते थे कि आश्चर्यकर्म हुआ है।

यह दिखाने के लिए कि हम ज़्या बात कर रहे हैं, इस सप्ताह के बाइबल पाठ में चंगाई के उदाहरणों का इस्तेमाल करते हैं। इन उदाहरणों में हमें यीशु की चंगाई के कई तथ्य मिल सकते हैं।

पहला, ध्यान दें कि यीशु केवल आश्चर्यकर्म ही नहीं कर सकता था। उसे ''बिना नाप'' या असीमित आत्मा मिला था (यूहन्ना 3:34)।

वह दूसरों के विश्वास से सीमित नहीं किया गया था। कई बार चंगाई पाने वाले का विश्वास होता था, जैसे कोढ़ी के मामले में (मज़ी 8:2)। परन्तु कई बार इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता था कि चंगाई पाने वाले का विश्वास था। उदाहरण के लिए छत में से

उतारे जाने वाले आदमी की चंगाई के मामले में, यीशु ने उस बीमार आदमी का नहीं, बल्कि उसके चार मित्रों का विश्वास देखा (मत्ती 9:2; मरकुस 2:5)। मुर्दों में से जिलाए गए लोगों का भी आश्चर्यकर्म करने की उसकी क्षमता में कोई विश्वास नहीं था।

यीशु किसी भी प्रकार की शारीरिक समस्या को चंगा करने तक ही सीमित नहीं था। उसने ''लोगों की *हर प्रकार की* बीमारी और *दुर्बलता* को'' चंगा किया (मत्ती 4:23)। इस सप्ताह के बाइबल पाठ में उसने ज्वर या बुखार जैसे ''साधारण'' रोग को चंगा किया और उसने ''कोढ़ से *भरे हुए*'' एक आदमी को भी चंगा किया था (लूका 5:12)। उसने केवल चुनिन्दा लोगों को ही चंगाई नहीं दी। जब किसी में सचमुच चंगाई देने की सामर्थ हो, तो इसकी कोई सीमा नहीं होती कि वह किसे चंगा कर सकता है और किसे नहीं।

यीशु की भी कोई सीमा नहीं थी कि वह कितने लोगों को चंगा कर सकता है। वह उन सब को चंगा कर सकता था। ऐसा कभी नहीं हुआ कि वह किसी को चंगा न कर पाया हो।

> सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, ... उसके पास लाए; और उसने उन्हें चंगा किया (मत्ती 4:24)।

> उस ने ... *सब* बीमारों को चंगा किया (मत्ती 8:16)।

> ... जिन-जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने *एक-एक* पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया (लूका 4:40)।

दूसरा, यीशु द्वारा की गई चंगाइयों में विशेष बातें थीं:

(1) चंगाई *तुरन्त* होती थी। लोग धीरे-धीरे चंगे नहीं होते थे। कोढ़ी के बारे में, हम पढ़ते हैं कि ''तुरन्त वह कोढ़ से शुद्ध हो गया'' (मत्ती 8:3ग; मरकुस 1:42; लूका 5:13 भी देखें)। झोले के मारे हुए आदमी के बारे में, मरकुस 2:12 कहता है, ''और वह उठा, और तुरन्त खाट उठाकर और सब के सामने से निकलकर चला गया ...'' (देखें लूका 5:25)।[3]

(2) चंगाई *सम्पूर्ण* थी। लोगों को आंशिक चंगाई नहीं मिलती थी। इसका पता हमारे इस सप्ताह के बाइबल पाठ के विवरणों से चलता है: आराधनालय वाला आदमी यीशु द्वारा अशुद्ध आत्मा को निकाले जाने के तुरन्त बाद पूरी तरह चंगा हो गया था। पतरस की सास यीशु द्वारा चंगा करने के बाद बिल्कुल ठीक हो गई थी; वह तुरन्त अपना सामान्य काम काज करने लगी थी। कोढ़ी थोड़ा सा ''चंगा'' नहीं हुआ था; उसका शरीर एकदम बिल्कुल साफ़ हो गया था। खाट पर पड़ा अड़तीस वर्ष का बीमार अपना बिस्तर उठाकर बाहर चला गया था। अपने अध्ययन में आगे हम और भी कई मामलों को देखेंगे: अन्धों को आंखें दी गईं, सूखे हाथ वालों को चंगा किया गया और मुर्दों को जिलाया गया था।

(3) चंगाई *विश्वास दिलाने वाली* थी। मैंने पहले भी टिप्पणी की थी कि यीशु के

आश्चर्यकर्म ऐसे थे कि कोई भी यह इनकार नहीं कर सकता था कि वे आश्चर्यकर्म हुए हैं। कुछ लोगों ने यीशु को यह कहकर कि उसके आश्चर्यकर्म बालज़बूल की सहायता से होते थे, उसे बदनाम ज़रूर करना चाहा; परन्तु वे इस बात से इनकार नहीं कर पाए थे कि आश्चर्यकर्म हुए हैं। परिणामस्वरूप, लोगों की भीड़ बढ़ने लगी और यीशु की चारों ओर प्रसिद्धि हो गई: ''... उसका यश फैल गया; ... और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली'' (मत्ती 4:24, 25)। यीशु द्वारा आराधनालय में अशुद्ध आत्मा वाले एक आदमी को चंगा करने के बाद, हम पढ़ते हैं:

> इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे कि यह ज़्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उस की आज्ञा मानती हैं। सो उसका नाम तुरन्त गलील के आस पास के सारे देश में हर जगह फैल गया (मरकुस 1:27, 28)।

कोढ़ी को चंगा करने के बाद, ''उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और भीड़ की भीड़ उसकी सुनने के लिए और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिए इकट्ठी हुई'' (लूका 5:15)। शायद इस सप्ताह के बाइबल पाठ का सबसे अच्छा उदाहरण छत में से उतारे गए आदमी को चंगा करने की बात है। यीशु के शत्रु भी यह इनकार नहीं कर सकते थे कि आश्चर्यकर्म हुआ है।

यीशु की चंगाइयों के अन्य पहलुओं पर भी बात की जा सकती है, परन्तु आइए एक और पहलू पर ज़ोर देते हैं: तीसरा, यीशु का उद्देश्य मुख्यतया आत्मिक था। उसका उद्देश्य लोगों के दुख दूर करना ही नहीं, बल्कि उनकी आत्माओं का उद्धार करना भी था। इस सप्ताह जब आप पढ़ रहे थे, तो ज़्या आपने लूका 4:43 पढ़ा? इसमें कहा गया है, ''परन्तु उस ने उन से कहा; मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, *ज़्योंकि* मैं *इसी लिए* भेजा गया हूं।'' उसने यह नहीं कहा कि उसे चंगाई देने के लिए भेजा गया है, बल्कि यह कहा कि उसे प्रचार के लिए भेजा गया है, ताकि लोग उद्धार पा सकें (देखें लूका 19:10)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु मनुष्य के ज़्लेश या कष्ट से दुखी नहीं होता था। जब उसने कोढ़ी को देखा, तो उसे ''उस पर तरस'' आया था (मरकुस 1:41)। इसका अर्थ यह था कि यीशु की प्राथमिकता चंगाई देना या दूसरे आश्चर्यकर्म करना नहीं था। उसकी सबसे बड़ी दिलचस्पी मनुष्यों की आत्माएं थीं, न कि उनके शरीर। जब उस आदमी को छत के बीच में से उतारा गया, तो यीशु ने पहला काम उसके पाप क्षमा करने का ही किया था (मरकुस 2:5)।

आज के तथाकथित आश्चर्यकर्म

चर्चा के इस भाग को कुछ अन्तरों की ओर ध्यान दिलाए बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

यीशु के आश्चर्यकर्मों में लोगों के विश्वास न करने का एक कारण यह है कि आज कुछ लोग वही सामर्थ होने का दावा करते हैं, जो यीशु और प्रेरितों के पास थी। जब नास्तिक लोग उन कामों की, समीक्षा करते हैं, जिन्हें ये लोग आश्चर्यकर्म कहते हैं तो यह पता चलने पर कि ये आश्चर्यकर्म नहीं हैं, वे यही निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु और प्रेरित भी आश्चर्यकर्म नहीं कर सकते थे। आइए यीशु के आश्चर्यकर्मों और आज के तथाकथित आश्चर्यकर्मों में कुछ अन्तरों पर ध्यान दें।

जैसा कि हमने देखा है यीशु अपने आश्चर्यकर्मों में सीमित नहीं था अर्थात वह दूसरों के विश्वास से, किसी प्रकार की शारीरिक समस्या से या आश्चर्यकर्मों की सीमित संज़्या तक ही सीमित नहीं था। इसके विपरीत आज जब लोग किसी को चंगाई नहीं दे पाते, तो अज़्सर कहते हैं, ''उसका विश्वास पूरा नहीं था।'' वास्तव में वे कह रहे होते हैं, ''हम किसी के विश्वास के द्वारा ही उसे चंगाई दे सकते हैं।'' इसके अलावा हम देखते हैं कि यीशु किसी भी प्रकार की बीमारी को चंगा कर सकता था, जबकि ऐसी बीमारियां या रोग हैं, जिन्हें आज के तथाकथित चंगाई देने वाले चंगा करने की कोशिश नहीं करेंगे। जब भी उनकी ''चंगाई सभा'' होती है, लोग बिना चंगे हुए अपने घरों को लौट जाते हैं।

आइए विशेषकर यीशु के आश्चर्यकर्मों की तीन विशेष बातों में अन्तर करते हैं: यीशु के आश्चर्यकर्म, पहले तो *तुरन्त* और, फिर, *सज़्पूर्ण होते थे*। तथाकथित चंगाई देने वाले अज़्सर यह ज़ोर देते हैं कि ''चंगाई पाने वाला'' पहले से अच्छा हो गया है और धीरे-धीरे पूरी तरह ठीक हो जाएगा। आप यदि किसी ''चंगाई सभा'' में जाएं, तो वहां किसी सूखे अंग वाले मनुष्य को चंगाई मिली नहीं मिलेगी; आप किसी मुर्दे को जी उठा नहीं देखेंगे। यीशु जैसे आश्चर्यकर्म करने का दावा करने वालों की तीसरी बात विनाशकारी है। यीशु के आश्चर्यकर्म *यकीन दिलाने वाले* थे: यीशु के आश्चर्यकर्मों को उसके शत्रु भी मानते थे; यहां तक कि नास्तिकों को भी मानना पड़ता था; कोई यह इनकार नहीं कर सकता था कि आश्चर्यकर्म हुआ है। मैंने एक ''चंगाई सभा'' में जाकर और टीवी पर कई ऐसे कार्यक्रम देखे हैं, परन्तु अभी तक मुझे उनमें कोई आश्चर्यकर्म नहीं मिला। यह इनकार करना कि आज आश्चर्यकर्म नहीं हो रहे, कठिन नहीं है।

अन्त में, ज़ोर देने में अन्तर है: यीशु का ज़ोर कभी भी शारीरिक, कष्ट से राहत दिलाने पर नहीं था, बल्कि उसका ज़ोर आत्मिक मनुष्य पर था। जो ''चंगाई सज़ाएं'' मैंने देखी हैं, उनमें दिया जाने वाला ज़ोर और उज़ेजना शारीरिक चंगाइयों पर केन्द्रित रहता है।

पुन:, मैं कहता हूं कि लोगों को विश्वास दिलाने में कि यीशु ने सचमुच आश्चर्यकर्म किए, बड़ी रुकावट आज के नकली आश्चर्यकर्म हैं। ऐसे कामों के दोषियों को एक दिन हिसाब देना पड़ेगा।

यीशु के आश्चर्यकर्मों का *परिणाम*

हमारा अन्तिम विचार पहले चर्चा की गई सच्चाई पर आधारित है। मैं इस विचार को बन्द करना चाहता हूं, ज़्योंकि यीशु के आश्चर्यकर्म-चाहे चंगाई के, तूफ़ान को शान्त करने,

या मुर्दों को जिलाने के हों–यही हैं: यीशु के आश्चर्यकर्मों से यह सिद्ध हुआ कि वह परमेश्वर का पुत्र और हमारा उद्धारकर्ता है।

यीशु के आश्चर्यकर्मों का उन्हें देखने वालों पर गहरा असर हुआ। इसे छत में से उतारे गए आदमी के मामले में देखा जा सकता है। तीनों वृत्तांतों को इकट्ठा करने पर आप देख सकते हैं कि वहां उपस्थित लोगों पर इस आश्चर्यकर्म का क्या असर हुआ था:

- वे चकित हो गए (मरकुस 2:12)।
- वे चकित हुए (लूका 5:26)।
- वे डर गए (मत्ती 9:8)।
- उन्होंने परमेश्वर की महिमा की (मत्ती 9:8; मरकुस 2:12; लूका 5:25, 26)।

यीशु ने ज़ोर दिया कि उसके आश्चर्यकर्मों का मूल उद्देश्य लोगों को विश्वास दिलाना था कि वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र है। उदाहरण के लिए, यह सिद्ध करने के लिए उसे पाप क्षमा करने का अधिकार है (जो केवल परमेश्वर ही दे सकता है), उसने छत में से उतारे गए झोले के मारे आदमी को चंगा किया (मत्ती 9:4–6)। इस अध्ययन में आगे इस सच्चाई को बार–बार समझाया जाएगा। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला हैरान था कि यीशु ही मसीहा है या नहीं तो ''हां'' कहने के बजाय यीशु ने कई लोगों को चंगा किया था। वास्तव में उसने कहा था, ''जाओ और यूहन्ना को बता दो कि तुम ने क्या देखा है'' (देखें लूका 7:20–23)।

यूहन्ना ने विशेष तौर पर इस तथ्य पर ज़ोर दिया। यूहन्ना 2:11 में यीशु के पहले आश्चर्यकर्म से उसके चेलों का विश्वास उसमें बढ़ा। यूहन्ना 5:36 में मसीह ने कहा कि ''यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।'' यीशु ने अपने चेलों को चुनौती दी कि मेरे ''कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो'' (यूहन्ना 14:11)। आप कह सकते हैं, ''यदि मैं यीशु के आश्चर्यकर्म देख लेता तो मैं अवश्य विश्वास कर लेता।'' यूहन्ना ने यह बात भी जोड़ी है:

> यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए *लिखे गए* हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।

मसीह के आश्चर्यकर्मों को दोहराने की आवश्यकता नहीं है। जिन्होंने उन्हें देखा था, हमारे पास उनकी पक्की गवाही है। अगर हम उनकी गवाही को नहीं मानते, तो यदि हम उसके आश्चर्यकर्मों को अपनी आंखों से देख भी लें तो भी विश्वास नहीं करेंगे (लूका 16:31)।

सारांश

यीशु के आश्चर्यकर्मों में कुछ महत्वपूर्ण सबक हैं। उदाहरण के लिए, उनसे पता

चलता है कि यीशु दूसरों की समस्याओं के बारे में कितना चिन्तित है। *आज भी* जब मसीह हमें किसी परेशानी में देखता है तो उसका मन करुणा से भर जाता है। इससे भी बढ़कर, इन आश्चर्यकर्मों से यह शिक्षा मिलती है कि यीशु सचमुच परमेश्वर का पुत्र है। इसलिए हम अपने पापों से उद्धार पाकर एक दिन अनन्तकाल के लिए उसके साथ रहने के लिए जा सकते हैं!

ज़्या आप *विश्वास* करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? ज़्या आप विश्वास करते है कि वह आपके पापों के लिए मरा (1 कुरिन्थियों 15:3)? ज़्या इस विश्वास से आपके मन में पश्चाज़ाप पैदा हुआ है (प्रेरितों 17:30)? ज़्या आप अपने विश्वास का अंगीकार करने और बपतिस्मे के द्वारा यीशु को पहनने को तैयार हैं (रोमियों 10:9, 10; गलातियों 3:26, 27)? यदि आप सचमुच यीशु में विश्वास करते हैं, तो अपने विश्वास को अभी दिखाएं।

टिप्पणियां

[1]इस सर्वेक्षण में मज़ी की बुलाहट के अलावा इस सप्ताह के पूरे बाइबल पाठ को शामिल गया है। [2]अबिलेन, टैज़्सस में अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी (उस समय अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज)। [3]चंगाई के समय की बात दूसरे मामलों में भी मिलती है, जो हमने पढ़े हैं।